ISSN: 2455 - 927X

EIJO: Journal of Humanities, Social Affair, Management and Innovative Research (EIJO– JHSAMIR)

Einstein International Journal Organization (EIJO)

Available Online at: www.eijo.in

Volume – 9, Issue – 1, January - February - 2024, Page No. : 18 – 21

राजस्थान में उच्च माध्यमिक विध्यालयों का भूगोल शिक्षण

रेखाशर्मा, भूगोल विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

प्रस्तावना

पाठ्यपुस्तक विशिष्ट शिक्षाओं में से एक है। भूगोल सीखना तथ्य, जानकारी, घटनाएँ आदि पर निर्भर करता है। भूगोलस्कूलों में पाठ्यपुस्तकें सीखने की सामग्री. महत्वपूर्ण शिक्षण हैं। भूगोल शिक्षण में सुधारयह काफी हद तक भूगोल पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है।गुणवत्तापूर्ण भूगोल की पाठ्यपुस्तकेंसामाजिक रूप से विज्ञान शिक्षक जो भूगोल के विशेषज्ञ नहीं हैंया भूगोल के अलावा किसी अन्य विषय में स्नातक किया हो कोस्व-सीखने का उचित अवसर प्रदान करती हैं। भूगोल की पाठ्यपुस्तकें प्रासंगिक जानकारी सही और अद्यतन मेंरूप शामिल करने की मांग करती हैं। ग़लत सूचना और ग़लत तथ्य औरजानकारी ने शिक्षक एवं छात्रों को गुमराह किया और भ्रमित किया। भूगोल की पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता अवधारणाओं, उदाहरणों के विवरण पर, गतिविधियाँ, व्यायाम, सरलता और स्पष्टताअध्यायों में प्रस्तुत तथ्यों और सूचनाओं में, निर्धारित पाठ्यक्रम का कवरेज, आकर्षकदृश्य, प्रासंगिक डेटा, आदि पर निर्भर करती है। अवधारणाओं, उदाहरणों की प्रस्तुति, भूगोल में तथ्य और गतिविधियाँपाठ्यपुस्तकें पाठकों में रुचि पैदा करती हैं।आलम (2017) ने सुझाव दिया कि भूगोल की पाठ्यपुस्तकेंस्कूलों का विकास इस प्रकार किया जाना चाहिएकि वे न केवल पर्याप्त जानकारी प्रदान करते हैंऔर पाठकों की रुचियों कोप्रोत्साहित करना आसान भी हैसमझने और विचारोत्तेजक करने के लिए। होने के नातेदृश्य अनुशासन, चित्रण और स्थानिक प्रतिनिधित्वको अधिक प्रतिवर्ती आकर्षक बनाया जाना चाहिए, पारंपरिक ज्ञान, औरस्थानीय भौगोलिक शब्द भूगोल बना सकते हैंपाठ्यपुस्तकें शिक्षार्थियों के लिए अधिक अनुकूल हैं।

मुख्य-शब्द: आकर्षकदृश्य, प्रासंगिक डेटा, पारंपरिक ज्ञान

शोध कार्य की विधि

प्रस्तुत शोध कार्य के उदेशयों की पूर्ति हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा। प्रस्तुत शोध में जयपुर जिले के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया जाएगा, जिसकी पूर्ति के लिए 30 भूगोल शिक्षकों तथा 300 विद्यार्थियों का चयन होगा।

उत्तर की मूल्यांकन : प्रामाणिक जानकारी के लिए विभिन्न साहित्यों का गहन अध्ययन किया गया।उपरोक्त अध्ययन के लिए विभिन्न समाचार पत्र लेख, मैगज़ीन और शोध पत्रिकाओं को देखा गया और उनका उल्लेख किया गया।प्रश्नावली के अनुसार मतों कोसांख्यिकीयमाध्यम से प्रस्तुत किया गया।

शोधपरिणाम

भूगोल की पाठ्यपुस्तकों के बारे में छात्रों की धारणावे अक्सर अपने शिक्षकों के माध्यम से उपयोग के बारे में जान सकते हैंप्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपनी धारणाओं को संप्रेषित करते हैंअपने शिक्षकों को पाठ्यपुस्तकों के बारे में। की धारणाशिक्षकों को भूगोल की पाठ्यपुस्तकों के विभिन्न गुणों के बारे में बताया गयाविद्यार्थियों के दृष्टिकोण से प्रस्तुत हैतालिका 1. जैसा कि तालिका से स्पष्ट है, उनकी धारणाएँ भिन्न-भिन्न हैंबहुत अच्छे से लेकर पैमाने की निरंतरता के साथ, अच्छा, औसत और गरीब से बहुत गरीब। निम्नांकित मेंअनुभाग, भूगोल की पाठ्यपुस्तकों के प्रति शिक्षकों की धारणाविद्यार्थियों के लिए वर्णित है।

तालिका1: राजस्थानबोर्डद्वारानिर्धारितभूगोलपरीक्षणपुस्तकोंकेबारेमेंछात्रोंकीसमझ						
प्रतिक्रियाप्रश्न	अच्छा		औसत		कोईप्रतिक्रियानहीं	
	उत्तरदाताओं कीसंख्या	उत्तरदाताओं काप्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं काप्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं काप्रतिशत
पठनीयता	159	53.0	89	29.7	52	17.3
स्वयंसीखना	149	49.7	92	30.7	59	19.7
भाषाकीसहजता	172	57.3	85	28.3	43	14.3
दृश्यप्रतिनिधित्व	169	56.3	79	26.3	52	17.3
तर्कसम्मतसोच	160	53.3	80	26.7	60	20.0
महत्वपूर्णविचारकौशल	173	57.7	78	26.0	49	16.3
दैनिकजीवनमेंअनुप्रयोग	155	51.7	98	32.7	47	15.7

उपरोक्त विश्लेषण से यह बिल्कुल स्पष्ट है कि सार्वजनिक रूप सेदस्तावेज़ भूगोल की पाठ्यपुस्तकें जांच के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों से खुली हैं। कुछ भूगोलवेत्ता औरशिक्षाविदों ने इन पाठ्यपुस्तकों का विभिन्न दृष्टिकोण से मूल्यांकन किया है, हालाँकिइनमें से अधिकांश अध्ययनसीधे तौर पर छात्रों की धारणाओं पर हैं।

पठनीयता: शिक्षकों की राय में पठनीयता के मामले में 53% छात्र अपनी भूगोल की पाठ्य पुस्तकों को अच्छा मानते हैं, 29.7% छात्र उन्हें औसत मानते हैं जबकि 17.3% ने कोई प्रतिक्रियानाही दी। इस प्रकार, पठनीयता की दृष्टि से पाठ्यपुस्तकों की समग्र रेटिंग संतोषजनक है।

विद्यार्थियों के स्व-शिक्षा को प्रोत्साहित करें: वह सहजता जिसके साथभूगोल की पाठ्यपुस्तकों का उपयोग छात्र अपने लिए कर सकते हैंस्व-शिक्षा भूगोल का एक महत्वपूर्ण गुण हैपाठ्यपुस्तकें। यह विशेष रूप से तब महत्वपूर्ण है जबभूगोल शिक्षण गैर-भूगोल स्नातक द्वारा किया जाता है। भूगोल के स्व-सीखने में आसानी के संदर्भ मेंछात्रों द्वारा प्रतिक्रिया: 49.7% छात्रों के लिए भूगोलपाठ्यपुस्तकें अच्छी हैं, 30.7 % छात्रों के लिए वेऔसत हैं जबकि 19.7 % छात्रों के पक्ष से कोई प्रतिक्रिया नहीं आयी।

पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त भाषा की सहजता: की भाषापाठ्यपुस्तक को समझने की क्षमता से मेल खाना चाहिएछात्र, इसमें शब्दजाल और तकनीकी शब्दों का प्रयोगस्कूली पाठ्यपुस्तकें छात्रों को हतोत्साहित करती हैं। सहजता की दृष्टि सेभूगोल की पाठ्यपुस्तकों में भाषा की सहजताको 57.3% छात्रों ने अच्छा मानातथा 28.3% छात्रों ने इन्हें औसतमानाजबकि 14.3%विद्यार्थियों ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

दृश्य प्रतिनिधित्व की गुणवत्ता: एक दृश्य अनुशासन के रूप में, भूगोलवेत्ता विभिन्न विज़ुअलाइज़ेशन तकनीकों का उपयोग पृथ्वी और उसमें मनुष्यों के स्थान को समझने के लिए करते हैं।इनमें से कुछ तकनीकें मानचित्र, रेखाचित्र, चित्र, तस्वीरें, आदि हैं। भूगोल की पाठ्यपुस्तकों का उपयोग अच्छा हैगुणवत्तापूर्ण दृश्य प्रस्तुतिकरण छात्रों का ध्यान आकर्षित करते हैंऔर उनकी भौगोलिक शिक्षा, अवधारणाएँ, तथ्य और कौशल को प्रोत्साहित और आसान बनाना। छात्रों का बहुमत (56.3%) को लगता है कि दृश्य प्रतिनिधित्व की गुणवत्ता अच्छा है। 26.3% छात्रों के लिए भूगोल की पाठ्यपुस्तकें दृश्य प्रतिनिधित्व के संदर्भ में औसत हैंजबकि 17.3 % छात्रों की इस पर ओई प्रतिक्रिया नहीं थी।

© 2024 EIJO, All Rights Reserved

छात्रों को तार्किक रूप से सोचने के लिए प्रोत्साहित करें: 53.3%छात्रोंके अनुसारमाध्यमिक विद्यालय भूगोल शिक्षक, भूगोल की पाठ्यपुस्तकें अच्छी गुणवत्ता की हैंछात्रों की तार्किक सोच क्षमता को प्रोत्साहित करना। 26.7 % छात्रों के लिएभूगोल की पाठ्यपुस्तकें औसत हैं जबकि 20 % छात्रों ने इस मुद्दे पर छात्रों ने कोई राय नहीं व्यक्त की।

विद्यार्थियों को आलोचनात्मक ढंग से सोचने के लिए प्रोत्साहित करें: आलोचनात्मक सोचछात्रों के बीच गुणवत्ता एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक गुणवत्ता है। सर्वे में पाया गया कि 58.7 % छात्र भूगोल की पाठ्यपुस्तकों को अच्छा मानते हैं तथा 26 % छात्रों ने भूगोल की पाठ्यपुस्तकों औसत रखा है जबकि, 16.3 छात्रों ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

उनके दैनिक जीवन में सीखना: स्कूल की पाठ्यपुस्तकेंइस प्रकार लिखा जाना चाहिए कि विद्यार्थी इससे जुड़ सकेंउनके दैनिक जीवन के पाठों के लिए। यह गुणपाठ्यपुस्तकें छात्रों को उनकी रुचि बनाए रखने में मदद करती हैं।अध्ययन से पता चलता है कि 51.7 % छात्र भूगोल की पाठ्यपुस्तकों को अच्छा माना जाता हैअन्य 32.7% ने पाठ्यपुस्तकों को औसत गुणवत्ता वाला माना जबकि 15.7 % की ओई प्रतिक्रिया नहीं रही।

शोध संदर्भ

1. अडेरोग्बा, के.ए. (2012)। प्रयोगशालाएँ और वरिष्ठ के बारे में सतत शिक्षण और सीखना
2. नाइजीरिया में माध्यमिक विद्यालय (एसएसएस) भूगोल। जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल एंड सोशल रिसर्च,2(4),5564.
3. आलम, एस. (2009)। भारतीय विद्यालय में भूगोल की स्थिति: चिंतन और क्रिया।
4. सिंह (सं.), 21वीं सदी में भारतीय भूगोल: युवा भूगोलवेत्ता एजेंडा(पृ. 84107). कैम्ब्रिज स्कॉलर्स प्रकाशक।
5. आलम, एस. (2017)। माध्यमिक विद्यालयों के लिए भूगोल की पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता पर एक नोटभारत। भूगोलवेत्ता, 64(1), 8897.
6. अमेरिकाना, ई. (1994). अंतर्राष्ट्रीय संस्करण. ग्रोलियर शामिल।
7. आर्टविनली, ई. (2010)। भूगोल में भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) का योगदान
8. जीआईएस से संबंधित शिक्षा और माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का दृष्टिकोण। शैक्षिक विज्ञान:सिद्धांत और व्यवहार, 10(3), 1277-1292।
9. बनर्जी, बी.के. (2006)। भारतीय विद्यालयों में भूगोल की शिक्षा। इंटरनेशनलशुल्बुचफोर्सचुंग, 28(3),
10. बौड, डी. (2010)। अभ्यास विकसित करने के लिए मूल्यांकन. जे. हिग्स में, डी. फिश, आई. गौल्टर, जे.रीड, और एफ. ट्रेडे (सं.), एजुकेशन फॉर फ्यूचर प्रैक्टिस (पीपी. 251-262)। रॉटरडैम: संवेदनाप्रकाशक. डीओआई:
11. चोर्ले, आर.जे., और हैगेट, पी. (1970)। भौगोलिक शिक्षण में सीमाएँ।
12. फातिमा, एम. (2016)। विभिन्न प्रकार के छात्रों के बीच एक अनुशासन के रूप में भूगोल की धारणाएँपाकिस्तान में शैक्षणिक स्तर रिगियो, 6(1), 6785.
13. इनामदार, आर. (2014)। भूगोल शिक्षण में समस्याएं (पहला संस्करण)। लक्ष्मी पुस्तक प्रकाशन।
14. इंटरनेशनल, डब्ल्यू.बी.सी. (1982)। विश्व पुस्तक विश्वकोश (खंड 1): विश्व पुस्तक-चाइल्डक्राफ्ट इंटरनेशनल।
15. पॉव, आई., और बेनेकर, टी. (2015)। डच भूगोल शिक्षा में भविष्य का परिप्रेक्ष्य।फ़्यूचर्स, 66, 96-105. डीओआई: 10.1016/जे.फ्यूचर्स.2015.01.001

© 2024 EIJO, All Rights Reserved

16. सिंह, सी.एस. (2020)। भारत में भूगोल शिक्षा: मणिपुर का एक केस अध्ययन। जर्नल काअंतःविषय चक्र अनुसंधान, 12(10), 13101327। http:// से लिया गया

17. सिंह, आर.एस. (2009)। भारतीय भूगोल की पहचान और छवि: लोगों का दृष्टिकोण। उच्च शिक्षा में भूगोल जर्नल, 33(3), 375391।

© 2024 EIJO, All Rights Reserved